

गीता सिंह

कं

चन नायकवड़ी इंडस हेल्थ प्लस (प्रा) लिमिटेड की संस्थापक हैं जोकि निवारक स्वास्थ्य देखभाल (प्रीवेंटिव हेल्थकेयर) के क्षेत्र में अग्रणी कंपनी है। यह अत्याधुनिक अस्पतालों के साथ साझेदारी के माध्यम से देश भर में किफायती कीमतों पर उच्च-स्तरीय स्वास्थ्य-जांच की सुविधा उपलब्ध कराती है और समय पर जांच कराने के संदेश को लोगों के बीच निरंतर फैला रही हैं, जिससे न सिर्फ व्यक्ति को असमय मृत्यु या अक्षमता का शिकार होना न सिर्फ टल जाता है, बल्कि परिवार को भी मानसिक एवं शारीरिक आघात और वित्तीय बोझ से सुरक्षा प्राप्त होती है। कंचन नायकवड़ी कंपनी के परिचालन और ब्रांड के निर्माण में बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उनकी जिम्मेदारियों में कंपनी के रणनीतिक उद्देश्यों, नीतियों का निर्धारण और उद्देश्यों को पूरा करने की दिशा में प्रगति पर नजर रखना शामिल है। विशेष रूप से संगठित प्रकृति का इंसान होने के कारण मौजूदा प्रगतियों को निरंतर सुधारते रखने का गुण उनमें समया हुआ है। स्वास्थ्य क्षेत्र में अपने अतुलनिय योगदान के चलते उन्हें देश में नहीं विदेश में कई पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है। पेश है उनसे गीता सिंह की हुई बातचीत के कुछ अंश।

निवारक स्वास्थ्य के क्षेत्र में आपका आना कैसे हुआ?

निवारक स्वास्थ्य देखभाल के कारोबार में आना संयोगवश ही था और मैंने ऐसी कोई योजना कभी बनाई नहीं थी। मेरे पिता को कैंसर हो गया था और इसकी जानकारी बहुत बाद में हुई। यदि समय रहते उनके रोग का पता चल जाता, तो उनकी जान बच सकती थी। मैं गर्भवती थी, इसलिए मुझे पापा की बीमारी के विषय में जानकारी नहीं दी गई। हमारे पास सभी संभावित संसाधन मौजूद थे, लेकिन इसके बावजूद हम उनकी जान नहीं बचा पाये। मुझे अहसास हुआ कि तकनीकी, पैसा और यहां तक कि स्वास्थ्य बीमा होने के बावजूद आपको जीवनशैली से उत्पन्न होने वाली बिमारियों जैसे कि कैंसर, हार्ट अटैक और मधुमेह से बचाने में मदद नहीं मिल सकती है। जीवन की इस घटना ने मुझे एक कदम आगे बढ़ने और निवारक स्वास्थ्य देखभाल की ओर समाज को जागरूक करने के लिये मजबूर किया। हमने वर्ष 2000 में बहुत कम लोगों के साथ एक छोटे से कमरे से शुरूआत की। वर्तमान में हम 14 राज्यों में 90 केंद्रों के साथ एक बड़े संगठन के रूप में विकसित हो गये हैं।



- कंचन नायकवड़ी

नकामयाबी को खुले दिल से स्वीकार करें

कंचन नायकवड़ी का मानना है कि जब हम सफलता प्राप्त होने पर खुश होते हैं तो किसी काम में नकामयाबी हासिल होने पर दुःखी होने की बजाय उन्हें भी खुले दिल से स्वीकार करना चाहिये।

इस क्षेत्र में आपको किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा?

लोगों को किफायती और समग्र निवारक स्वास्थ्य जांच उपलब्ध कराने के लिये हमारे सामने एक ऐसे एकीकृत मॉडल का निर्माण करने की चुनौती आई, जिसमें अस्पतालों, डायग्नॉस्टिक सेंटर्स, प्रयोगशालाओं और पैथ सेवाओं की सामूहिक शक्ति का उपयोग किया जा सके। प्रत्येक नये उद्यम को सबसे पहले संसाधन आबंटन की चुनौतियों से निपटना पड़ता है। इसके अलावा हमारे लिये शुरूआती चुनौती लोगों को गैर-संक्रामक रोगों की प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनाना और उन्हें अपनी जीवनशैली के प्रति जागरूक करना था।

हमें अपने निजी जीवन के विषय में कुछ बतायें?

मेरा जन्म वर्ष 1972 में मुंबई में हुआ था। मैं ऊटी से अपनी स्कूल और मुंबई यूनिवर्सिटी से कॉलेज की पढ़ाई पूरी की। यात्रा करना और साहसिक खेल मेरे जुनून हैं। मेरी दो प्यारी बेटियां हैं। मैं खाली समय में अपनी बेटियों की पढ़ाई में मदद करती हूँ, घर के काम निपटाती हूँ और दोस्तों से मिलने की कोशिश करती हूँ।

आपकी जिंदगी में खुशी की क्या अहमियत है?

खुशी हमारे जीवन में सबसे महत्वपूर्ण कारक है। मुझे बहुत खुशी मिलती है, जब लोगों को हमारे स्वास्थ्य निवारक पहलों का कोई लाभ मिलता है। जीवनशैली से उत्पन्न होने वाली जानलेवा बिमारियों की शुरूआती अवस्था पहचान होने पर जब लोगों की जान बचती है, तो इससे बेहतर खुशी प्राप्त करने का तरीका और क्या हो सकता है।

स्वस्थ जीवनशैली के लिये आपका मंत्र क्या है?

मुझे खाने-पीने का बहुत शौक है, लेकिन मैं अपनी डाइट पर सख्ती से नजर रखती हूँ और नियमित व्यायाम करने पर ध्यान देती हूँ। मैं थोड़े-थोड़े अंतराल पर खाना खाती हूँ और मैंने अपने भोजन को 5-6 छोटे आहार में विभाजित करती हूँ। मैं इस बात का ख्याल रखती हूँ कि परिवार के साथ भोजन करूँ, ताकि शेयर करने की खुशी हमारे आहार में शामिल हो जाये। मैं स्वस्थ संतुलित जीवन के लिये अपने काम से ब्रेक भी लेती हूँ और साल में एक बार छुट्टियां मनाने जाती हूँ।

लोगों की बेहतरी के लिये आपकी भविष्य की क्या योजनाएं हैं?

बच्चे, जो हमारी भविष्य की पीढ़ी हैं, जीवनशैली के कारण उत्पन्न होने वाले रोगों का शिकार हो रहे हैं। मैं उन्हें घर पर बैठे रहने और खेलने के बजाय घर के बाहर की गतिविधियों में भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करना चाहूंगी। माता-पिता को उनमें नियमित अंतराल पर खाने-पीने की आदत डालनी चाहिये। बच्चों को किसी भी शारीरिक गतिविधियों में संलग्न रहना चाहिये और उन्हें नियमित तौर पर व्यायाम करना चाहिये।

आप अपनी सफलता का श्रेय किसे देती हैं?

मेरी सफलता का श्रेय मेरे अंकल सदानंद बापट, मेरे पति और परिवार के सदस्यों को जाता है। मैं अपनी सफलता का श्रेय इंड्स टीम और उन लोगों को भी देना चाहूंगी, जिन्होंने निवारक स्वास्थ्य देखभाल (प्रीवेंटिव हेल्थकेयर) की अवधारणा को समझा और अपनी सेहत की स्थिति जानने के लिये स्वास्थ्य-जांच के लिये आगे आये।

आप युवा पीढ़ी को क्या संदेश देना चाहेंगी?

युवाओं में अपने काम के प्रति जुनून होना चाहिये। उन्हें जोखिम उठाने से डरना नहीं चाहिये। हम सभी को अपनी असफलता मुस्कुरा कर स्वीकार करनी चाहिये और गलतियों से सीखना चाहिये। नाकामयाबी को खुले दिल से स्वीकार करना और सफलताओं का जश्न मनाना, हमेशा मूल-मंत्र होना चाहिये। अपने सपनों पर दैव विश्वास रखें और उन्हें पूरा करने के लिये कड़ी मेहनत करें। ●